विश्व आर्य स्वयंसेवक संघ

कार्यकर्ता

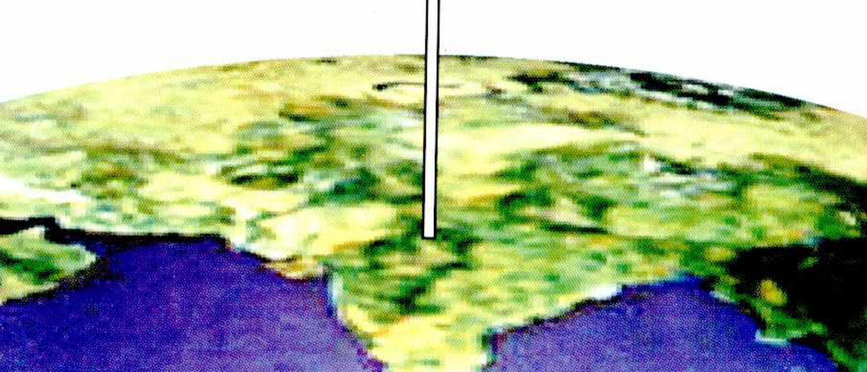

ईश्वर का सच्चा स्वरूप

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम् ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

यजुर्वेद ४०/८

ओ३म्

विश्व आर्य स्वयंसेवक संघ

कार्यकर्ता

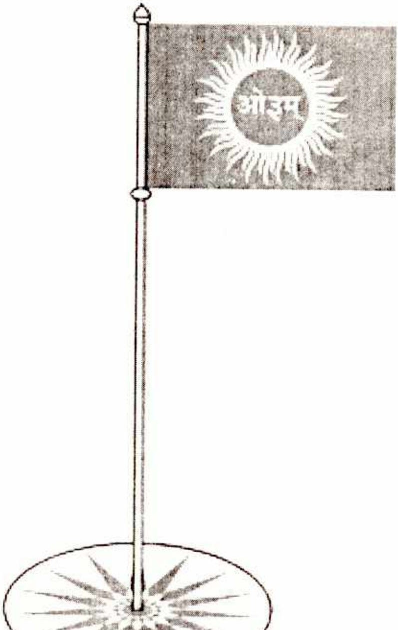

वैदिक विचार साधना

८५, नूतन क्लोथ मार्केट, रायपुर दरवाजा बाहर,
महर्षि दयानन्द मार्ग, कर्णावती-३८० ०२२

प्रवक्ता : व्यक्ति निर्माण में समर्पित श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के उद्‌बोधनों में से संकलित

संकलन एवं संपादन : **पूनमचन्द नागर**

प्रकाशक : **वैदिक विचार साधना**
८५, नूतन क्लोथ मार्केट, रायपुर दरवाजा बाहर,
महर्षि दयानन्द मार्ग, कर्णावती-३८० ०२२
दूरभाष : ०७९-५४५३९२६

प्राप्ति स्थान :
- **आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय,**
  देलवाडा, आबु पर्वत, (सिरोही-राजस्थान)
  दूरभाष : ०२९७४-२३८५०३
- **आर्य समाज मंदिर**
  रायपुर दरवाजा बाहर, महर्षि दयानन्द मार्ग,
  कर्णावती-३८० ०२२
  दूरभाष : ०७९-५४५४३७३

आवृत्ति : प्रथम संस्करण - वर्ष प्रतिपदा २०५९

मूल्य : रु. १५/-

मुद्रक : **साधना मुद्रणालय ट्रस्ट**
खमासा पुलिस चौकी के पास, कर्णावती-१

अक्षर संयोजन : **नोम एन्टरप्राईझ**
रत्नापार्क, अहमदाबाद-६१ दूरभाष : ७४७४६७६

ओ३म्

विश्व आर्य स्वयंसेवक संघ

कार्यकर्ता

प्रस्तावना :

कार्यकर्ता कार्य की चेतना शक्ति है। कितना संपर्क विशेषण है। हम सोचें - चेतना याने चैतन्य-कार्य के उस प्रकार के स्वरुप का निर्माता। चैतन्य निर्माण कर सकनेवाला स्वयं चैतन्यपूर्ण होना चाहिये । अति परिश्रमी सबसे कार्य करवा सकनेवाला । यह चेतनाशक्ति आने के लिये चिन्तन आवश्यक है ।

चिन्तन में अपनी दृष्टि से शाखा ही प्रमुख है । किसकी शाखा ? जहां आर्य वहां शाखा। समाज के सभी घटकों का सहभाग और सबको आकर्षित कर सके ऐसे कार्यक्रम। मस्तिष्क में यही बातें चलनी चाहिये । परन्तु यह चिंतन अकेले में करते हैं क्या ? नहीं, यहां सामूहिक चिन्तन होता है - सबको लगना चाहिये शाखा अपनी है, बढनी चाहिये। हम केवल नाममात्र के कार्यकर्ता नहीं। कार्य करनेवाले और कार्य को बढानेवाले हैं और सभी ऐसे बनें, यह प्रयास। इसके लिये साथ साथ घूमना, मिलना, बैठना, खान-पान करना, जिससे सब एकरस हो जाये ।

इसी में गट व्यवस्था, गट नायकों का दायित्व इसका विचार - किन्तु यह दायित्व समझाने में केवल शब्दों का उपयोग नही

होता। उसे स्वयं करके बताना पड़ता है। यह साथ साथ मिलने से होता है और इसी में से विषय स्पष्ट होते जाते हैं। दायित्व बोध होता है। बौद्धिक चर्चा से नहीं। क्योंकि चर्चा तो रुखी होती है। अपने संघकार्य में रुक्षता या रुखापन नहीं, स्नेह काम करता है।

स्नेहपूर्ण सहयोग, सहकार्य होना चाहिये, जिसे अंग्रेजी में Lubricant Co-operation - कहते है। उदाहरण के रुप में अपने साइकिल को ले। सभी साइकिलें चलती हैं - अनेक आवाज आते हैं - किन्तु जिसमें ठीक तेल दिया हो वह आवाज न करती हुई चलती है। अपना व्यवहार ऐसा हो।

साइकिल में तो तेल देंगे परंतु अपने कार्य में यह 'स्नेह' परस्पर के प्रेममय, आत्मीयता के संबंधों से ही निर्माण होता है। कार्यकर्ता अन्तर्बाह्य स्नेहपूर्ण होना चाहिये। तभी वह कम शक्ति खर्च कर अधिक काम कर सकता है। यह स्नेह, कार्यकर्ता अपने व्यवहार से शाखा द्वारा निर्माण करता है। केवल संघस्थान ही नहीं, सभी जगह व्यवहार स्नेहपूर्ण हो, सभी से अपनत्वका भाव हो।

हमें चिन्तन से ध्यान में आयेगा कि यह स्नेहपूर्ण व्यवहार, सबको अपना आत्मीय मानकर चलने का गुण, यह कार्यकर्ता की अपनी चेतना शक्ति है। यह अपनी 'चेतना शक्ति' हम सदैव जाग्रत रखे जिससे जितना परिश्रम हम करें उतने ही परिश्रम में तिगुना चौगुना कार्य हम कर सके।

कार्यकर्ताओं को जीवन के अनेक क्षेत्रों में कार्य करना हैं। कुछ रुचि के कारण, कुछ क्षेत्र की आवश्यकता के कारण,

परन्तु सबकी मूल प्रेरणा संघकार्य होने से इन सबके परस्पर संबंध भी वैसे ही आत्मीयता पूर्ण होने चाहिये। सबको अन्तःकरण की भावना के कारण यह लगना चाहिये कि हम सब एक हैं और समाज की एकता के लिए भिन्न-भिन्न क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हमारे संघ कार्य में रहते हुए यदि यह भावना तीव्र नहीं हुई तो क्षेत्र बदलने पर वह कैसी रहेगी ? इसका विचार भी हमें करना चाहिये, क्योंकि राष्ट्र के सभी कार्य, समाज के सभी कार्य उत्तम चलें यह अपने ही कार्यकर्ता का दायित्व हैं।

इस दायित्व में और एक विशेषता है कि इस दायित्व को पूरा करना है। किन्तु वह हम पूरा कर रहे हैं यह भाव मन में नहीं रहेगा। वह कार्य उस क्षेत्र के ही प्रमुख करते हैं, हम केवल - Catalytic agent है। इतनी कार्यकुशलता फिर भी अलिप्तता - यह अपने अन्तःकरण की विशालता और सबको अपना मानने की भावना के बिना हो नहीं सकती। इसका अभ्यास हरेक कार्यकर्ता करें, आत्मनिरीक्षण करें, इस रास्ते पर मैं ठीक चल रहा हूं या नहीं उसका विचार करें और अपने को रुक्षता (रुखेपन) से बचाकर एक स्नेहपूर्ण आकर्षक कार्यकर्ता के नाते तैयार करें।

कुशल संगठक :

कार्यकर्ता कुशल समाज संगठक बने। समाज संगठक शब्द द्वि आयामी है। एक आयाम है समाज में परिवर्तन और दूसरा आयाम है इस पद्धति से जो भाव जागृत हुआ है उसका संगठन। जब समाज संगठन कहा जाता है तो सगंठन के प्रत्येक व्यक्ति में एक

विशेष प्रकारकी भाव जागृति हुई है और ऐसे भाव जागृत लोग एकत्रित हुए हैं। इस कल्पना से एक कुशल समाज संगठक यह शब्द प्रयोग हम समर्पित कार्यकर्ता के बारे में कर सकते हैं। कार्यकर्ता की एक और विशेषता होनी चाहिये । उदात्त विचार-सरल पद्धति । उदात्त विचार और उसे साकार करनेवाली अत्यंत दुर्गम पद्धति ऐसा विचार रखनेवाले बहुत लोग हो सकते हैं। विविध प्रकार की बीमारियों एवं औषधियों की जानकारी देनेवाले एक ग्रंथ का नाम है "चरक"। उसे पढ़ने का प्रयास करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि उसमें जो दवाईयां बतायीं गयीं है, वह निर्माण करना आसान नहीं है, हर किसी के लिये संभव भी नहीं है। 'चरक' में हरेक प्रकार की बीमारी के लिये दवाई लिखी है किन्तु दवाई निर्माण करना अत्यंत कठिन साध्य है। एक ऐसे ही उदात्त-विचार, लेकिन निर्माण करने के लिये उतनी ही सरल पद्धति भी। इस पद्धति का उल्लेख हम "शाखा", इस नाम से करतें है।

शाखा पद्धति : ५ विशेषतांए

हमारी यह जो शाखा पद्धति है, उसकी कुल पांच विशेषताएं हैं - पहली विशेषता है, दैनिक। दूसरी - एक घंटे का कार्यक्रम। तीसरी विशेषता है - सर्वत्र। चौथी विशेषता है - सभी के लिये और पांचवी विशेषता है - सामान्य कार्यक्रम। शाखा नाम का अपना जो कार्यक्रम है, वह वर्ष भर में कभी एक-दो बार करेंगे। मानों किसी त्यौहार की तरह कभी-कभी शाखा लगायेंगे - ऐसा नहीं है। शाखा यह प्रतिदिन लगनी चाहिये। शाखा का कार्यक्रम एक घंटे के लिये निर्धारित है - बाकी २३ घंटे का समय अपने निजी

काम के लिये, शाखा में उपस्थित रहेनेवाला स्वयंसेवक उपयोग में ला सकता है।

जहां आर्य वहां शाखा

शाखा कहां हो सकती है? लोक भाषा में गंगा पवित्र नदी है और जब गंगा स्नान करने की इच्छा हो जाती है तो अपने समाज का मनुष्य - ऋषिकेश जायेगा, हरिद्वार जायेगा, प्रयाग जायेगा अथवा वाराणसी में जायेगा। पटना नगरी में भी गंगा नदी है, लेकिन यह कभी सुनने में नहीं आया कि कोई गंगा स्नान के लिये मैं पटना जा रहा हूं, ऐसा कहे। हां, पटना के लोग जरुर गंगा स्नान के लिये नदी पर जाते हैं। लेकिन लोकभाषा में तीर्थक्षेत्र जिसे कहा जाता है, ऐसे तीर्थक्षेत्र निश्चित हो जाते है। तो इसी प्रकार समाज में उचित में उचित परिवर्तन और ऐसे समाज का संगठन करने का तीर्थक्षेत्र निश्चित है और केवल निश्चित जगह में ही यह परिवर्तन हो सकता है, ऐसी हमारी कल्पना नहीं है। हम नगर में घूमने के लिये निकलते हैं तो बजाज की ऑटोरिक्षा देखने को मिलती है। मद्रास, बेंग्लोर, त्रिवेन्द्रम, कलकत्ता, पोरबंदर, अहमदाबाद - देश में कही भी जाओ - बजाज की ही ऑटोरिक्षा है। लेकिन बजाज की ऑटोरिक्षा केवल एक या दो स्थानो में बनती है। वर्तमान में पुणे में और औरंगाबाद में। इन दो स्थानों पर ही उनको बनानेकी कार्यशाला है। संघ की शाखा यह एक कार्यक्रम एक विशिष्ट तीर्थक्षेत्र में ही हो सकता है अथवा ऐसा मनुष्य निर्माण करने की कार्यशाला मर्यादित स्थानों पर ही हो - ऐसी बात नहीं है। देशभर में कई स्थानों पर संघ

की शाखाएं लग सकती हैं और हमारा प्रयत्न रहेगा कि जहां आर्य है वहां विश्व आर्य स्वयं सेवक संघ की शाखा लगे । इसीलिये शब्द प्रयोग किया - सर्वत्र । कहीं पर भी जाओ वहां संघ की शाखा हो सकती है । आर्य का अर्थ है वैदिक संस्कृति के प्रति समर्पित व्यक्ति ।

सभी का सहभाग

हम जानते हैं कि भारत की सेना है । सेना किसलिये ? तो देश का संरक्षण करने के लिये उसकी आवश्यकता है । समाचार पत्रों में विज्ञापन आता है कि सेना में भर्ती हो जाओ । राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का राष्ट्र के प्रति स्वाभाविक रुप से यह कर्तव्य है कि देश की सुरक्षा के लिये खड़े हो जाना, इसलिये हम भी सेना में भर्ती होने को निकले तो क्या सेना में हमारी भर्ती संभव है ? सेना में शरीर की आयु उंचाई, आदि का निश्चित मापदण्ड होता है और विज्ञापन में उसका उल्लेख होता है । यदि हम उस मापदण्ड में नही आते तो हम चाहे तो भी हमे सेना में प्रवेश नहीं मिल सकेगा । किन्तु जहां तक संघ शाखा का प्रशन है, वहां केवल युवकों को अथवा जिनको अभी मूछें निकल रहीं हो, ऐसे ही लोगों को प्रवेश मिलेगा, ऐसी बात नहीं है । यहां तो जिनके सिर के बाल उड़ गये हैं, ऐसे वृद्ध व्यक्ति और अभी अभी जिसने अपने दो पैरों पर चलना सीखा है, ऐसा शिशु भी संघ की शाखा में आ सकता है । इसीलिये शाखा की चौथी विशेषता बताते हुए 'सभी का सहयोग' - यह शब्द प्रयोग किया है ।

शारवा के कार्यक्रम

संघ की शाखा में हम कौन से कार्यक्रम करते हैं ? इन कार्यक्रमों का दर्शन करे तो ध्यान में आयेगा कि कुछ प्रौढ लोग बैठकर आर्षग्रंथो को पढ़ते हैं - बैठे बैठे कोई दो-चार आसन करतें है, यदि शरीर साथ दे तो नवांङ्गआसन नामक व्यायाम भी करते हैं, जो जवान हैं, तरुण हैं वे तो नियुद्ध करते हैं और मस्ती में खेल-कूद के कार्यक्रमो में भाग लेते हैं। ये सभी कार्यक्रम सामान्य हैं। किन्तु उनमें असामान्य परिवर्तन की क्षमता है। यह विशेषता है। अपने संगठन के लिए इस प्रकार की शाखा नामक आसान कार्यपद्धति की।

हमारे कार्य की चेतनाशक्ति - कार्यकर्ता

कोई भी कल्पना हो, उसे साकार करने के लिये कोई न कोई पद्धति अपनानी पड़ती है। जरा विचार करें, यह कल्पना क्या है और पद्धति किसे कहते हैं। कल्पना याने 'शब्द' और पद्धति याने 'कृति' है। किसी भी कार्य का कोई न कोई हेतु निश्चित रहता है और उस हेतु के लिये एक मार्ग निश्चित रहता है। यहां भी हेतु याने 'शब्द' और मार्ग याने 'कृति' समझना चाहिये। इसी प्रकार कार्य के लिये साध्य होता है और साध्य प्राप्त करने के लिये साधन होता है - यहां भी साध्य याने 'शब्द' और साधन याने 'कृति' ही है। संगठन के कार्य में चेतना शक्ति कौनसी है, इसका कभी हमने विचार किया तो यह ध्यान में आयेगा कि ऐसे कार्य में चेतना शक्ति एक व्यक्ति होता है और ऐसे व्यक्ति को संघ में 'स्वयंसेवक'

कहा जाता है । कुछ विशिष्ट कारणों के लिये इस स्वयंसेवक के लिये एक और शब्द जोड़ा जाता है, वह शब्द है 'कार्यकर्ता' । यह स्वयंसेवक कार्यकर्ता ही हमारे कार्य की चेतना शक्ति है हम सभी कार्यकर्ता है इसलिए हमारे प्रेरक विषय का चिन्तन करते समय, अभ्यास वर्ग में भी, कार्यकर्ता के बारे में भी कुछ न कुछ विषय रखना आवश्यक है । आज हम इस 'कार्यकर्ता' के बारे में ही विचार करेंगे ।

कार्यकर्ता के प्रकार

संघ में कार्यकर्ता के प्रमुख रुप से तीन प्रकार है । प्रथम प्रकार उन कार्यकर्ताओं का है, जिन्हे प्रचारक कहा जाता है, जो पूर्ण समय केवल संघ का ही कार्य समर्पित भाव से करनेवाला होता है । इतने विशाल समाज में जितने प्रचारक ज्यादा संख्या में होंगे उतना ही संघ मजबूत होगा । दूसरे प्रकार के कार्यकर्ता में उनका समावेश होता है, जिन्हे सामान्यतया शाखा-कार्यकर्ता कहा जाता है । इनमें एक कार्यवाह होता है, दूसरा मुख्य शिक्षक और उसकी सहायता करने वाले गण शिक्षक, गण अग्रेसर, गट नायक, उप-गटनायक आदि होते हैं । किन्तु कार्यवाह और मुख्य शिक्षक शब्द में, शाखा में कार्य करनेवाले ऐसे अन्य सभी कार्यकर्ताओं का अन्तर्भाव है । कार्यकर्ता का तीसरा प्रकार है, जिनमें मंडल प्रमुख, नगर शारिरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, प्रान्त कार्यवाह और प्रान्त के संघचालक आदि की गणना होती है, जिनके पास एक निश्चित उपशाखा की एक ईकाई नहीं रहेती, बल्कि एक भौगोलिक क्षेत्र

रहता है । इस तरह कार्यकर्ताओं का एक वर्ग प्रत्यक्ष शाखा चलानेवाला होता है और दूसरा कार्यकर्ताओं का वर्ग ऐसा होता है जो उसके भौगोलिक क्षेत्र में चलनेवाली विभिन्न शाखाओं को दिशा देनेवाला, उनका मार्गदर्शन करनेवाला, उन्हे सूचना देनेवाला होता है - इस वर्ग के कार्यकर्ताओं के लिये पूरे देश में, 'प्रवासी कार्यकर्ता' - यह शब्द प्रयोग किया जाता है ।

संघ नौका के खेवनहार

प्रमुखतया इन दो प्रकार के कार्यकर्ताओं के कार्य का स्थूल स्वरुप भी निश्चित है । जो प्रत्यक्ष शाखा के कार्य से जुड़ा कार्यकर्ता है, वह अपने कार्य की गतिशीलता निश्चित करता है और जो प्रवासी कार्यकर्ता है वह अपने कार्य की दिशा निश्चित करता है । जैसे नदी में चलनेवाली नौका रहती है । उस नौका में संचालन के दो साधन होते हैं । एक साधन को पतवार कहा जाता है । इसका उपयोग नौका की दिशा बदलने के लिये होता है । नौका को दांयी ओर बांयी ओर मोड़ना हो तो इस पतवार का सहारा लिया जाता है । पतवार की हलचल के कारण ही नौका निश्चित दिशा में बढ़ती है । लेकिन इसके साथ ही नौका में दो चार ऐसे चप्पू होते हैं, जिन्हे हिलाने से नौका आगे बढ़ती है । एक अच्छी नौका हम किसे कहेंगे ? जिस नौका में केवल पतवार है वह नौका दिशा तो पकड़ सकती है, लेकिन आगे नहीं बढ सकती - वह अपने स्थान पर ही दिशा बदलती रहेगी । अच्छी नौका वह भी नहीं, जिसमें चार-पांच चप्पू हैं और चप्पू चलानेवाले लोग हैं - ऐसी नौका आगे तो जायेगी लेकिन किस दिशा में जायेगी, कहां जायेगी, कहा नहीं

जा सकता। एक अच्छी नौका बनानेवाला कारीगर उस नौका में चप्पू भी बनाता है, और पतवार भी बनाता है - चप्पू का काम है, गतिशीलता और पतवार का काम है दिशा देना। संघ की नौका योग्य पद्धति से आगे ले जाने के लिये हमारे पास जहां गतिशीलता बनाये रखने वाले कार्यवाह, मुख्य शिक्षक नामक कार्यकर्ता हैं वहीं वर्तमानकाल के परिप्रेक्ष्य में कार्य को उचित दिशा देनेवाले प्रवासी कार्यकर्ताओं का भी वर्ग हो। इसमें से मैं किस वर्ग का कार्यकर्ता हूं, यह हममें से हरेक कार्यकर्ता को अपना उचित मूल्यमापन करना चाहिये।

घड़ी के दर्शक और कार्यकर्ता

हम जो भी कार्यकर्ता हैं, कार्यवाह, मुख्य शिक्षक तथा मंडल, विभाग, नगर और प्रान्त स्तर के कार्यकर्ता, हमारे जिम्मे जो काम है, उसे प्राथमिकता देकर काम करते हुए अपने संघ कार्य को निरंतर आगे बढाने के लिये स्थितियों का निर्माण करना, यह हम सभी कार्यकर्ताओं का दायित्व है। आप सभी जानते हैं कि लोगों के हाथों मे घड़ी रहती है - इस घड़ी में दर्शक होते है, जिन्हे कांटे कहे जाते है। इनमें एक दर्शक (कांटा) बहुत तेज गति से आगे सरकता नजर आता है - अपनी सामान्य आंखो से उसकी गति देखी जा सकती है। दूसरा दर्शक (कांटा) ऐसा होता है, जिसकी गति सरलता से देखने को नहीं मिलती, किन्तु १५-२० मिनट बाद वह काटा भी आगे खिसका हुआ स्पष्ट नजर आता है। घड़ी में लगा एक तीसरा दर्शक (कांटा) अत्यंत धीमी गति से आगे बढ़ता है - एक चक्कर काटने के लिये उसे पूरे बारह घंटे लगते हैं। हम

यह भी देखते हैं कि प्रत्येक घड़ी में तीन दर्शक होते हैं - उनके रंग भले ही अलग अलग हों, किन्तु सभी दर्शक एक ही, काम करते हैं। उनकी गति अलग अलग हैं, उनकी लम्बाई, आकार भी अलग अलग हैं, उनके रंग भी अलग हैं, लेकिन सभी दर्शकों का काम एक ही-समय दिखाना होता है। हमारे कार्य में, कार्यवाह, मुख्य-शिक्षक, शिक्षक, गटनायक, अग्रेसर - इस प्रकार दायित्व संभालने वाले कार्यकर्ता अथवा शारीरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, सेवा प्रमुख, सम्पर्क प्रमुख, माननीय संघचालक आदि संबोधनों से युक्त कार्यकर्ता हैं - लेकिन इन सभी का एक समान कार्य है और वह है संघकार्य का सभी दृष्टि से विकास और विस्तार करना। इस मूलभूत कार्य को ध्यान में रखकर ही सभी कार्यकर्ताओं को अपना अपना दायित्व निभाना चाहिये।

कार्यकर्ता, कोई शोभा की वस्तु नहीं

हम जिस कक्ष में बैठे हैं, उसमें उपर एक छत है। कोई अगर पूछे कि इस छत का क्या उपयोग है ? तो उसका उत्तर निश्चित है - वर्षा या धूप से भीतर बैठे लोगों को सुरक्षित रखना - यही छत का हेतु है। कभी कभी ऊपर घूमनेवाले पंखे भी दिखाई देते हैं - यह पंखे आखिर किसलिये हैं ? इनका क्या उपयोग है ? इन प्रश्नों के उत्तर में स्वाभाविकतया कोई भी कहेगा कि गर्मी के दिनों में हवा मिलनी चाहिये, इसलिये ये पंखे है। इसी प्रकार बिजली के बल्बों का हेतु भी निश्चित है कि अंधकार होने पर प्रकाश देना। लेकिन कभी कभी अच्छे सम्पन्न परिवारों के घर की दीवारों पर

हिरन का सिर भी लगा दिखाई देता है। पूराने सम्पन्न परिवारों में दीवार पर हिरन के सिर लगे अक्सर देखे जाते थें। तो मन में प्रश्न उठता है कि यह हिरन का सिर किसलिये लगाया होगा ? क्या इससे प्रकाश मिलता है ? क्या इससे हवा मिलती है ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'ना' में ही मिलेंगे। किन्तु इसका उत्तर है - यह शोभा बढाने के लिये है। हिरन के सिर से घर की, उस कमरे की शोभा बढती है, ऐसी कल्पना है। क्या, संघकार्य में भी शोभा बढाने के लिए कोई कार्यकर्ता है ? क्या ऐसा अपना विचार है ? इस प्रश्न का उत्तर 'ना' में ही मिलेगा। संघ शाखा की शोभा बढ़नी चाहिये - ऐसा, संघकार्य को सुशोभित करने के लिये हमारे यहां कोई कार्यकर्ता नहीं है।

'There is no decorative post in Vishva Arya Svayam Sevak Sangh. All are living posts' अर्थात विश्व आर्य स्वयं सेवक संघ में कोई भी शोभा का पद नही है, सभी सजीव पद है। इस वाक्य का हमें सदा चिन्तन करना चाहिये कि मैं अपना कार्य सुशोभित करने के लिये नही करता हूं। मैं एक सजीव कार्यकर्ता हूँ। इस कल्पना से अपने लिए जिस प्रकार का दायित्व मिला है, कार्य की गतिशीलता अथवा कार्य की दिशा-दिग्दर्शन का - किसी भी प्रकार का कार्य हो, इस कार्य के लिये उचित न्याय देनेवाला मैं कार्यकर्ता हूं - यह मन में विचार लेकर मैं अपना स्वयं का विकास करुंगा - कार्यकर्ता से संघ की यही अपेक्षा है।

'एकोऽहम् बहुस्याम्...

एक और पद्धति से हम विचार करें। नगर में घूमते हुए बाजार में मकई का भुट्टा बेचनेवाला विक्रेता दिखाई दिया। मन में इच्छा हुई कि चलो हम भी भुट्टा खायेंगे - सो, उसके सामने जो भुट्टे रखे थे, उनमें से दो-चार निकालकर एक अच्छा सा भुट्टा निकाला। अब यह अच्छा भुट्टा याने क्या ? - तो जिस भुट्टे में अनेक दाने - सौ-सवा सौ दाने थे - ऐसा भुट्टा खरीदा। वापस आते समय मन में विचार आया कि इस भुट्टे में सौ-सवा सौ दाने हैं, तो क्या मकई की खेती करनेवाले किसान ने बुआई करते समय सौ-सवा सौ बीज एकत्रित रखे थे ? पर ध्यान में आया कि ऐसा नहीं है। किसान ने एक-एक बीज ही जमीन में डाला था - उसपर अपना पसीना बहाया - खाद, पानी दिया - कुछ दिनों बाद एक अंकुर, एक पौधा निकला और कुछ दिनों बाद उसी पौधे ने सौ-सवा सौ दाने वाला भुट्टा दिया। बीज जानता है कि मैं एक हूं, मुझे अनेक होना है। इसी प्रकार हमें भी विचार करना चाहिये कि मैं संघ का कार्यकर्ता हूं - मैं एक हूं, मुझे अनेक होना है - यह मानसिकता रखकर मैं अनेक लोगों को कार्यकर्ता के नाते से कैसे प्रेरणा दे सकता हूं - कैसे जोड़ सकता हूं - कैसे विकसित कर सकता हूं - यह विचार हमेशा मन में रखकर मैं अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करता रहूंगा। इसीलिये हमारे शास्त्रो में सूत्र बताया गया है - 'एकोऽहम् बहुस्याम' मैं एक हूं, मुझे अनेक होना है।

संघस्थान का उत्पादन

संघ वस्तु भंडार में आपको कई चीजे यथा गणवेश, पुस्तके, चित्र दण्ड आदि मिलेगा किन्तु वहां ऐसी कोई आलमारी नहीं है, जिसमें कार्यकर्ता भर कर रखे हों और इसलिये अगर कोई मुख्य शिक्षक या कार्यवाह भंडार में जाकर अपनी शाखा के लिये ६-६॥ फुट उंचाईवाले हृष्ट-पुष्ट - कुछ कार्यकर्ताओं की मांग करे और उसके लिये जो कीमत हो, चुकाने की तैयारी दर्शाये तो भंडार-प्रमुख कहेगा - हमारा संघवस्तु भंडार कार्यकर्ता देनेवाला भंडार नहीं है। कार्यकर्ता की फसल हमारे संघस्थान पर ही तैयार होती है। हम विचार करें कि मैं एक शाखा चलाता हूं तो मेरी शाखा का उत्पादन क्या होना चाहिये। मेरी शाखा का उत्पादन कार्यकर्ता है, इसे ध्यान में लेकर ही शाखा में आनेवाले स्वयंसेवको में से किसे मैं कार्यकर्ता का आकार दे सकता हूं इसका विचार होना चाहिए। हम जानते है कि गिली मिट्टी का पिण्ड लेकर एक शिल्पकार हाथ में छोटा सा साधन लेकर उसे इच्छित आकार देने का प्रयास करता है। उस साधन के सहारे मिट्टी के पिण्ड में से अनावश्यक भाग छांटकर वह सुन्दर मूर्ति तैयार कर सकता है। हमें भी उस शिल्पकार की तरह सोचना और कार्य करना चाहिये। मेरी शाखा में आनेवाले अनेक स्वयंसेवक ऐसे हैं कि जिनके जीवन में, व्यवहार में, दिनचर्या में अनावश्यक हिस्सा है - उस अनावश्यक हिस्से को निकाल दूं - तो एक कार्यकर्ता की सजीव मूर्ति मैं निर्माण कर सकता हूं। कार्यवाह, मुख्य शिक्षक को भी एक शिल्पकार की भूमिका निभानी है - मेरे संघस्थान की

मिट्टी से मैं कार्यकर्ता की फसल देता हूं - यह स्पष्ट विचार मन में रखकर हमें शाखा-कार्य शुरु रखना चाहिये ।

कार्यकर्ता का दर्शन कैसा हो ?

स्वाभाविकतया काम करते समय कार्यकर्ता अकेला नहीं, बल्कि अनेक लोगों को साथ लेकर, काम करने के लिये खड़ा करने वाला होने के कारण कार्यकर्ता समूहमय हो जाता है। समूह में कार्य करते समय कार्यकर्ता का दर्शन किन शब्दों से होता है ? इसका जब हम विचार करते हैं तो पहला शब्द ध्यान में आता है - चिन्तन, दूसरा शब्द है - चर्चा, तीसरा शब्द है - निर्णय चौथा शब्द है - योजना पांचवा शब्द है - परिश्रम और छठा शब्द है - सफलता । हमारा कार्यकर्ता एक समूह में काम करनेवाला कार्यकर्ता है । हमारी एक शाखा है । मैं कार्यवाह हूं । मेरी शाखा का एक मुख्य शिक्षक है। मेरी शाखा, सायं शाखा होने के कारण एक तरुण शिक्षक, एक बाल शिक्षक, दो शिशु शिक्षक है और प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन गटनायक हैं - यह सब मिलाकर १३-१४ कार्यकर्ता हैं। हमारी शाखा में तो हम समूह में काम करनेवाले कार्यकर्ता हैं । अपनी शाखा ठीक करने लिये हरेक कार्यकर्ता को स्वयं चिन्तन करना चाहिये ।

अपने संघस्थान पर कौन से कार्यक्रम होने चाहिये - मेरे मन में विचार आया और शुरु कर दिया - संघ में ऐसा नहीं चलेगा । मैं अपने मन का विचार अपने सभी सहयोगी कार्यकर्ता

बंधुओं के सामने रखता हूं। इसके लिये मैने चर्चा शब्द का प्रयोग किया है। तो, ऐसे चिन्तन और चर्चा के आधार पर हमारा जो कार्यवाह है, वह निर्णय लेगा - यह अपना निर्णय है। निर्णय होने के बाद उसे कार्य रुप में परिणित करने के लिये योजना बनानी चाहिये और उस योजना के अनुसार काम करने के लिये प्रत्येक कार्यकर्ता को परिश्रम करना चाहिये। इसी आधार पर कार्य में सफलता मिलती है।

चिन्तन और व्यवहार

एक कार्यकर्ता - इस दृष्टि से उसका दर्शन है - इसी प्रकार एक कार्यकर्ता समूह - इस दृष्टि से भी उसका दर्शन है। इसी पद्धति से हम अपना काम आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। अपनी शाखा का काम बढ़ाते समय हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हमारी शाखा का विकास एक विशिष्ट पद्धति से होना चाहिये। संघ कार्य करनेवाले सभी कार्यकर्ताओं को इसी विशिष्ट पद्धति से चिन्तन और कार्य करना चाहिये। इसके लिये हमारा प्रथम दायित्व है कि शाखा नामक कार्यक्रम का संचालन ठीक से होना चाहिये - हां, मुख्यतः यह दायित्व कार्यवाह, मुख्य शिक्षक और उसके सहयोगी अन्य कार्यकर्ताओं का है। उनका जो दायित्व है, वह यह कि मेरी शाखा के एक घंटे का कार्यक्रम और २३ घंटो में जो करने के लिये आवश्यक व्यवहार है - इस दृष्टि से मेरी शाखा व्यवस्थित है।

व्यवस्थित शाखा कौन सी ?

व्यवस्थित शाखा हम किसे कहेंगे ? ठीक शाखा का प्रथम लक्षण है - योजनाबद्ध कार्यक्रम । ६० मिनिट का विभाजन किस प्रकार होना चाहिये - इस सम्बन्ध में अपने शारीरिक विभाग ने एक पत्रक तैयार किया है, जिसे आपने भी देखा होगा । उसमें यह सुझाया गया है कि इस ६० मिनटों में कुछ ऐसे कार्यक्रम होने चाहिये, जिनसे परमपिता परमेश्वर एवं वैदिक संस्कृति के प्रति हमारा समपर्ण भाव निर्माण हो सके - कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये जिनसे अनुशासन का स्वभाव निर्माण होता है - कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये - जिनके माध्यम से शक्ति की उपासना करते हैं, - कुछ कार्यक्रम ऐसे होते है जिनसे हममें विजयभाव विकसित होता है - और कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये, जो हमारे हृदय में देशभक्ति की भावना वृद्धिगत करते हों । इस प्रकार ईश्वर समर्पण, अनुशासन, शक्ति, विजयभाव और देशभक्ति की भावना को पुष्ट करने वाली पांच पद्धतियों से परिणामकारक मेरी शाखा होनी चाहिए । यह मेरे कार्यक्रम का स्वरुप है । गीतों और अमृतवचनों के साथ ही नित्य प्रार्थना के विविध कार्यक्रम होते हैं । ऐसे चतुर्विध कार्यक्रमों के माध्यम से स्वयंसेवकों में नित्य परमेश्वर के प्रति समर्पण भाव, अनुशासन, शक्ति, विजयभाव और देशभक्ति के संस्कारो से संस्कारित होकर समाज का एक उत्तम मनुष्य हम अपने शाखा में निर्माण करते हैं । प्रतिदिन ६० मिनिट की शाखा के ये विविध कार्यक्रम हमारी कार्यवाही का एक मुख्य पहलू है ।

व्यवस्था संबंधी पहलू

हमारी कार्यवाही का दूसरा पहलू है - व्यवस्था। हमारा एक संगठन है और संगठन कहते ही, व्यवस्था का होना अत्यावश्यक है। कपड़ा व्यवसाय के बारे में मुम्बई, अहमदाबाद शहरों के नाम विख्यात है। दूसरे शहरों में भी कपड़ा तैयार होता है। हम जानते हैं कि कपड़े के अनेक प्रकार होते हैं - पहले वह केवल कपास के धागे से बनता था - अब कृत्रिम धागा भी आ गया है - ५० प्र.श. कपास का धागा - ५० प्र.श. कृत्रिम धागा उपयोग में लाया जाता है। रेशम के धागे से भी कपड़ा तैयार होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कपड़ो में विविधता है लेकिन एक बात निश्चित है कि विश्व में कहीं भी आपको ऐसा कपड़ा देखने को नहीं मिलेगा कि जिसमें केवल खड़ा धागा है। खड़े धागे के साथ ही आड़ा धागा रखने पर ही कपड़े की बुनाई होती है। हम भी एक संगठन का वस्त्र निर्माण करना चाहते हैं तो हमारे संगठन के वस्त्र में खड़ा धागा है अपनी शाखा का सूचिपत्र और आड़ा धागा है सभी के साथ सम्पर्क रखनेवाला गटनायक। इस पद्धति से हमें संगठन का वस्त्र बुनना है। इसके लिये हरेक शाखा का सूची-पत्र होना चाहिये। यह सूची-पत्र किसी एक व्यक्ति के दिमाग में नहीं बल्कि कागज पर, अथवा अपनी दैनन्दिनी में लिखा होना चाहिये। कागज पर स्वयंसेवको के नाम लिखे जाए और उनसे सम्पर्क हेतु एक गटव्यवस्था भी होनी चाहिये।

शारवा की गट-व्यवस्था

संगठनात्मक सशक्तता निर्माण करने कि लिये वास्तव में ये दो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं - सूचीपत्रक और गटव्यवस्था। अनेक बार इस सन्दर्भ में सभी लोगों का दुर्लक्ष रहता है, यह ध्यान में आता है। प्रायः कोई त्यौहार या उत्सव आये तभी उसकी तैयारी के लिये गट-व्यवस्था सक्रिय हो उठती है और उत्सव समाप्त होते ही गटनायक सूची पत्रक अलग निकालकर रख देता है, फिर दैनिक शाखा के लिये, उस ओर उसका ध्यान नहीं जाता। संगठन की मजबूती के लिये यह उदासीनता कोई अच्छी बात नहीं। संगठन-कार्य के निरंतर वृद्धि के लिये हमें इसकी आदत डालनी चाहिये। कार्यवाह-मुख्यशिक्षक को चाहिये कि वह अपनी-अपनी शाखा का सूचीपत्रक तैयार करें और दस लोगों के साथ सम्पर्क रखनेवाला गटनायक तैयार करें और ऐसे गटनायकों को प्रतिदिन काम करने की आदत लगा दें। ऐसे गटनायकों की कम से कम माह में एक बैठक अवश्य होनी चाहिये। इस पद्धति से व्यवस्था खड़ी करनी होगी - प्रत्येक मंडल में, प्रत्येक नगर में, प्रत्येक भाग में - प्रत्येक शाखा के लिये इस प्रकार व्यवस्था खड़ी करने का आग्रह प्रवासी कार्यकर्ता का होना चाहिये।

नवनिर्माण भी जरुरी

हमारी कार्यवाही से जुड़ा हुआ तीसरा शब्द है - शाखा की उपस्थिति। 'उपस्थिति' के साथ ही मैं इसमें चौथा शब्द जोड़ना चाहूंगा - वह है नवनिर्माण। आखिर में, अगली पीढी का कार्यकर्ता

तैयार करने का स्थान भी मेरी शाखा है । प्रतिवर्ष २-४ कार्यकर्ता मेरी शाखा देती है - यह आत्मविश्वास कार्यवाह - मुख्यशिक्षक में होना चाहिये । इस प्रकार हम देखते हैं कि शाखा की कार्यवाही में कार्यक्रम, व्यवस्था, उपस्थिति और नवनिर्माण - ये पहलू अन्तर्भूत हैं । इन समस्त पहलुओं के साथ निरतंर एक घंटे चलनेवाली मेरी दैनिक शाखा है और इस कार्यवाही का शत-प्रतिशत दायित्व कार्यवाह - मुख्यशिक्षक के कंधो पर है ।

प्रशिक्षण की व्यवस्था

शाखा का एक और आयाम है, जिसे हम प्रशिक्षण कहते हैं । प्रशिक्षण के दो प्रकार हैं - हमारी बैठक और संघस्थान पर होनेवाला शारीरिक-वर्ग । जहां तक बैठक का प्रश्न है, वह भी प्रशिक्षण का भाग है । बैठक में कैसे बैठना चाहिये - बैठक में कैसी चर्चा करनी चाहिये - चर्चा में कोई बात अगर हमें जंचती नहीं तो अपनी नापसंदगी कैसे और किन शब्दों में व्यक्त करनी चाहिये - आदि बातों से भी मनुष्य बहुत कुछ सीखता है - (How to work in group) समुह में कार्य कैसे करें - इसलिये कार्यकर्ता के प्रशिक्षण की हमारी एक पद्धति है - कार्यकर्ताओं की बैठक । यह ठीक है कि शाखा की साप्ताहिक बैठक हो सकती है, भाग की बैठक माह में एक बार और महानगर अथवा प्रान्त की बैठक वर्ष में एक या दो बार हो सकती है - कालावधि कम-अधिक हो सकती है । लेकिन बैठक के सम्बन्ध में हमारी एक ही कल्पना है कि इन बैठकों में हम अपने कार्यकर्ताओं का प्रबोधन करते है ।

इसी पद्धति से संघ स्थान पर चलने वाले शारीरिक वर्गों का हमें विचार करना है । किस ईकाई पर कब और कहां वर्ग आयोजित करना है, इसका पूर्ण स्वातंत्र्य प्रत्येक प्रान्त को दिया गया है, लेकिन यह वर्ग होना ही चाहिये - यह ध्यान में रखते हुए वर्ग की पुनरावृत्ति ठीक होनी चाहिये । हम सभी ने शरबत यह नाम सुना होगा । अब कोई पूछे कि शरबत में क्या होता है ? तो जवाब मिलेगा - पानी, चीनी, नींबू और नमक का मिश्रण याने शरबत । अब यदि हमने १० लिटर पानी में १ चम्मच शक्कर डाली और दो बूंद नींबू का रस डाला और थोड़ा सा नमक मिलाकर घोला और किसी को शरबत कहकर दिया - तो क्या होगा ? उसे पीने के पश्चात् वह व्यक्ति कहेगा - अरे, यह तो पानी ही है । लेकिन इसका रासायनिक पृथक्करण यदि किया जाए तो उसमें शक्कर, नमक और नींबू का रस होने की बात सिद्ध हो जायेगी । फिर भी वह शरबत नहीं है, क्योंकि पानी के हिसाब से अन्य वस्तुओं का प्रमाण अत्यल्प है । इसी प्रकार यदि कोई कहे कि पांच वर्ष में एक बार हमारा एक शारीरिक वर्ग हुआ - वर्ग होता है, किन्तु पांच वर्ष में एक बार होता है । हर पांच वर्ष की समयावधि के नाते इसे भी नियमित कहा जा सकता है । लेकिन जिसे अंग्रेजी में फीक्वेंसी (आवृत्ति) कहते हैं - वह आवृत्ति बहुत कम है । हम यह विचार कर सकते हैं अतः बार-बार इसका प्रशिक्षण होना चाहिये - यह मुख्यतः प्रवासी कार्यकर्ता का काम है ।

कार्य का विस्तार

प्रवासी कार्यकर्ता का दूसरा प्रमुख काम है - संघ कार्य का विस्तार करना। अपने संघ का कार्य आज जितने स्थानों पर है, उससे अधिक स्थानों पर होना चाहिये। इस दृष्टि से विचार कर कहां नई शाखा हो सकती है ? वहां मैं कौनसे दो कार्यकर्ता भेज सकता हूं ? जो वहां नई शाखा खोलने के लिये आधार बन सकेंगे। अनेक पद्धति से कार्य विस्तार का विचार हम कर सकते हैं - किन्तु यह किसी शाखा कार्यवाह का काम नहीं। यह नगर कार्यवाह का दायित्व है कि वह किस शाखा से, कौन से स्वयंसेवक नई शाखा खड़ी करने के लिये भेजे।

स्वयंसेवकों का स्तर

इसके साथ ही प्रवासी कार्यकर्ता को 'उत्पादन' के विषय में भी अधिक चिन्ता करनी चाहिये। अपनी भिन्न भिन्न शाखा में आनेवाले स्वयंसेवकों का स्तर कैसा हो ? वे किस पद्धति से बोलते हैं ? दिये हुए शब्दों का कितना पालन करते हैं ? परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का उनका स्वभाव है क्या ? अनेक पद्धतियों से, हमारे स्वयंसेवको का गुणोत्कर्ष कैसा हो रहा है, उसका मूल्यांकन आवश्यक है। साथ ही 'कार्य रुप में परिणत' करना, ''जिसे अंग्रेजी में एप्लिकेशन (Application) कहा जाता है'' की स्वयंसेवक की सभी कसौटियों पर तैयारी आवश्यक है। स्वयंसेवको में से किस स्वयंसेवक को किस क्षेत्र में भेजा जाए, इसका निर्णय लेना भी प्रवासी कार्यकर्ता का काम है। संघ क्षेत्र के अलावा समाज जीवन

के विविध क्षेत्र हैं, जिनमें संघ के संस्कारित स्वयंसेवकों को आवश्यकतानुसार भेजना - यह काम प्रवासी कार्यकर्ता का है ।

संघ कार्य का आधार

शाखा कहने पर हमारे ध्यान में आयेगा कि संघ का कार्य - शाखा की कार्यवाही, प्रशिक्षण, विस्तार, उत्पादन और कार्यान्वित- (Execution, Education, Expansion, Production and Application) इन पांच शब्दों के आधार पर खड़ा है । इसमें कार्यवाही का प्रमुख दायित्व कार्यवाह व मुख्यशिक्षक पर है तो अन्य चार मुद्दों का दायित्व प्रवासी कार्यकर्ता पर है । हम सभी कार्यकर्ताओं को, कार्यकर्ता शब्द में अन्तर्भूत हमसे अपेक्षित कर्तव्यों का चिन्तन करते हुए उसी के आधार पर अपने कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये ।

सायं शाखा और व्यवसायी शाखा (प्रभात अथवा रात्रि) इन दो प्रकार की शाखाओं का हमें अलग अलग विचार करना होगा- सायं शाखा के सम्बन्ध में हम विचार करें कि हर वर्ष मेरी शाखा- संघ कार्य का विस्तार करने के लिये १५ दिन, २५ दिन विस्तारक के रुप में बाहर निकलने वाले लोग, निर्माण करने वाली शाखा हो । पढ़ाई पूरी करने के बाद साल, दो साल, पांच साल संघ का काम करने के लिये प्रचारक निकल जाऊंगा - ऐसा विचार करने वाला स्वयंसेवक मेरी शाखा से निर्माण हुआ है । अपने जीवन में संघ कार्य को सर्वश्रेष्ठ प्राथमिकता देकर मैं अपने जीवन की रचना करना चाहता हूं -यह विचार प्रमुखता से सायं शाखा में रखा जाना चाहिये -हर शाखा से नया कार्यकर्ता प्रशिक्षित होना चाहिये ।

व्यवसायी शारवा से अपेक्षाएं...

व्यवसायी शाखा का प्रमुख दायित्व है, सेवा कार्य अथवा समाज प्रबोधन के विविध प्रयोग जो संघ की प्रेरणा से चलाये जाए तथा जो समाज में अभिसरण निर्माण करने की दृष्टि से होते हो - ऐसे कार्यों में सहयोग देना और अपने कार्य की आर्थिक स्थिति मजबूत करना। व्यवसायी शाखाओं के सन्दर्भ में यही विचार आग्रहपूर्वक करना उचित होगा। जो कार्यकर्ता व्यावसायिक शाखा से सम्बन्धित है, उन्हे यह देखना चाहिये कि मेरी प्रभात शाखा अथवा रात्रि शाखा अपने किसी सेवा कार्य से जुड़ी है अथवा नहीं ? क्या सामाजिक परिवर्तन के प्रयोगों में मेरी शाखा के स्वयंसेवक भाग लेते हैं या नही ? क्या उनके घर में सामाजिक सौहार्दता का व्यवहार होता है ? क्या उनके घरों में वैदिक संस्कृति एवं आर्यत्व का दर्शन अथवा संघ में प्राप्त संस्कारों का दर्शन होता है ? वह होना चाहिये - इस दृष्टि से हमारा आग्रह हो। हमारे एक प्राध्यापक कार्यकर्ता की लड़की कढ़ाई काम (धागा भरने का काम) सीखकर आयी और उसने अपने पिताजी से कहा कि मुझे ताजमहल का चित्र कपड़े पर खींचकर दो, मैं उसमें धागा भरना चाहती हूं। उन्होने अपनी बेटी से कहा - बेटी ! अपने यहां ताजमहल का चित्र नहीं मिलेगा - गुरुकुल का चित्र मिलेगा - इस पर धागा भरो - उसके लिये चाहिये तो गौशाला का चित्र है। ऐसे चित्रों पर धागा भरने का काम करो - ताजमहल का चित्र अपने घर में नहीं मिलेगा। तो इस प्रकार मेरे जीवन में आर्यत्व का दर्शन देखने को मिलता है या नहीं ? छोटे शिशु स्वयंसेवक से हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते

कि वह अपने परिवार में वैदिक संस्कृति एवं आर्यत्व का दर्शन कराये, क्यों कि वह कोई निर्णय नहीं ले सकता। हां, प्रभात शाखा का स्वयंसेवक - अपने परिवार का प्रमुख होता है - उनके पारिवारिक जीवन में कभी वैदिक संस्कृति एवं आर्यत्व का दर्शन होता है या नहीं ? उनके पारिवारिक जीवन में सामाजिक जीवन में समरसता का व्यवहार होता है या नहीं ? जिस गली में वह रहता है, उस गली में रहने वाले समाज के साथ वह काम करनेवाला - सामाजिक अभिसरण करनेवाला है या नहीं ? ये सारे प्रश्न कार्यवाह, मुख्यशिक्षक और प्रवासी कार्यकर्ता के समक्ष विचारार्थ होने चाहिये। उन्हें सोचना चाहिये कि आखिर मेरी सायं शाखा से मुख्यतः क्या अपेक्षा है ? मेरी प्रभात अथवा व्यवसायी शाखा से कौनसी अपेक्षाए है। यह मन में विचार लेकर सभी लोगों को एक विषय के सम्बन्ध में निश्चित निर्णय लेना चाहिये कि दैनिक शाखा के प्रति उसकी अनन्य भक्ति है। बाकी, किस राजनैतिक दल की चुनाव में कैसी विजय होगी ? और किसी स्थान पर बैंको, विद्यालयों आदि के चुनावो में कौन चुनकर आयेगा इसकी चिन्ता करनेवाले बाकी लोग हैं। मैं कार्यवाह हूं, मैं मुख्यशिक्षक हूं, मेरे पास निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में संघ का दायित्व आया है। मैं मुख्यतः अपनी दैनिक शाखा को ही अनन्य भक्ति से न्याय देता हूं।

दो देशों के बीच युद्ध हुआ - जिस देश की पराजय हुई उस देश के लोग एकत्रित बैठकर पराभव की कारणमीमांसा करने लगे। विश्लेषण करते समय एक ने कहा कि हमारा सेनापति, जो घोड़े पर सवार था, सबसे आगे था किन्तु उनका घोड़ा चलते

चलते अटक गया, इसलिये सेनापति गिर पड़ा और सेनापति के गिरने से हमारा पराभव हुआ। स्वाभाविकतया विश्लेषण समिति के एक सदस्य ने पूछा कि युद्ध के लिये उपयोग में आनेवाले घोड़े को तो विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है, तब यह घोड़ा चलते समय अटक क्यों गया ? तो, एक ने जवाब दिया कि घोड़े के पैरों में नाल लगे होते हैं - नाल उखड़ गया, इसलिये घोड़ा अटक गया। समिति के दूसरे सदस्य ने पूछा कि नाल पक्की लगाने के लिये कीलें ठोंकी जाती हैं और इसके लिये विशेष आदमी भी रखा जाता है - तो उत्तर मिला कि एक कील निकल गयी थी - अन्त में विश्लेषण करनेवाली उस समिति ने यह निर्णय दिया कि घोड़े की नाल की एक कील निकल जाने के कारण हमारा देश पराभूत हुआ।

अधिक परिश्रम आवश्यक

राष्ट्र में वैदिक राष्ट्रवाद, वैदिक संस्कृति एवं आर्यत्व का सभी दृष्टि से प्रभाव निर्माण करना है तो हमारी शाखा नामक, जो एक स्थान पर चलने वाला कार्य है, वह मजबूत होना चाहिये। यह विचार मन में लेकर, मेरा काम है कि मेरे घोड़े की नाल की कील निकलने न पाये, ऐसी मजबूती से बिठाऊं। सेना विभाग का एक वाक्य है - Give more sweat in peace time then you will loose less blood in war time - हम सभी को इस वाक्य का पूर्वार्ध ध्यान में लेना चाहिये - Give more sweat in peace time - हमारे लिये ऐसा समय मिला है, जिस समय में हम पसीना बहाकर हमारी संघ शाखा अधिक सशक्त, अधिक

विस्तारित, अधिक परिवर्तन करने के लिये सक्षम बनाये - ऐसा विचार करने वाला कार्यकर्ता खड़ा रहा, तो विश्व में विश्व आर्य स्वयं सेवक संघ एक प्रभावी संगठन के रुप में देखा जाएगा।

कार्यकर्ता से अपेक्षाएं

हम अपने विचारों पर पैनी नजर रखें क्योकि वे कुछ ही दिनो में शब्द बनकर मुखर होने लगेंगे। अपने शब्दो पर और भी तिखी नजर रखें क्योकि वे धीरे-धीरे कर्म बनकर प्रकट होते है। अपने कर्मो का परीक्षण करते रहे क्योंकि वे अब नहि तो फीर आदत बनकर रहेंगे। अपनी आदतो को भुलावे में मत डाले क्योकि वे चरित्र बने बिना नही रह सकती। अपने चरित्र पर दृष्टी रखे क्योकि वही हमारे भविष्य का जन्मदाता हैं।

- अतः प्रत्येक कार्यकर्ता प्रातः सायं नियमित परमपिता परमेश्वर की स्तुति उपासना प्रार्थना संध्या द्वारा समर्पित भाव से अवश्य करें जिससे कार्यकर्ता को आत्मबल एवं ऋतंभरा बुद्धि की प्राप्ति होगी। कार्यकर्ता के जीवन में ध्येय मार्ग पर अग्रसर होने की परमपिता परमेश्वर से निरंतर प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी।
- "कर्णवंतो विश्वं आर्यम्" इस ध्येय मंत्र के साथ जितनी एकरुपता होगी, उठते-बैठते, सोते-जागते सभी समय अंतःकरण में, अपने जीवन में, ध्येय का स्पंदन चलता रहेगा तो अपने शब्दों में भी सामर्थ्य आयेगा। जिनसे बात करेंगे वह अपनी बात मानेंगे। जिसको कुछ करने के लिये कहेंगे, वह उसे करने के लिये तैयार होगा।

- हमारे प्रति प्रत्येक के हृदय में एक आदर, आत्मीयता, प्रेम, श्रद्धा और विश्वास का भाव उत्पन्न हो। भिन्न-भिन्न प्रकार के भिन्न-भिन्न लोग अपने संपर्क में आते रहते हैं, इन सब संबंधो में हमें माधुर्य भर देना चाहिये। इसके लिये हमें अपने व्यवहार को शुद्ध और स्नेह-सम्पन्न बनाना अति आवश्यक है।
- प्रत्येक स्वयंसेवक आदर्श बनने का प्रयत्न करे। परमपिता परमेश्वर के प्रति समर्पित होकर इस दृढ निश्चय से परिपूर्ण हो कि मैं अंतःस्फूर्ति से वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्र की सेवा करुंगा। राष्ट्र की सेवा से मेरा पैर कभी पीछे नहीं हटेगा। सब प्रकार से उत्तम शरीर, उत्तम मन, निश्चयात्मक ज्ञान (वेद निर्दिष्ट), विवेकयुक्त बुद्धि और हृदय में आत्मविश्वास की उमंग, वीरता की विजिगीषा (विजयभाव), इन सब गुणों से युक्त एक आदर्श स्वयंसेवक का जीवन बनाने का प्रयत्न करना है।
- हमें नित्य यह सोचते हुए कार्य में जुटना है कि इस कार्य को पूरा करना मेरा पुनीत कर्तव्य है और तदनुसार मैं अपनी मनोरचना में बौद्धिक विवेक में तथा शारीरिक क्षमता में ऐसे आवश्यक परिवर्तन लाऊंगा। परमपिता परमेश्वर मेरे साथ है जिससे मैं इस कर्तव्य को उत्तम प्रकार से निपुणता के साथ पूरा कर सकूंगा। "शीर पर बर्फ, मुह में शक्कर, हृदय में आग, पैर में चक्र" यह सदैव याद रखें।
- सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता का गीता में बड़ा सुंदर वर्णन आया है।

मुक्त संगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते। (१८/२६)

अर्थात् जो निःसंग और निर्लेप है, जिसमें अहंकार नहीं है, जिसके पास धैर्य है, जिसके मने में आकांक्षा और उत्साह है तथा जो कर्म की सिद्धि-असिद्धि से एवं लाभ-हानि से विचलित नहीं होता है, उसी को सात्विक कार्यकर्ता कहते हैं !

- हमारे कार्यकर्ता को केवल भावनाप्रधान नहीं होना चाहिये क्योंकि भावनातिरेक में कभी-कभी अविवेकपूर्ण, अनाचार, अत्याचार और अनिष्ट कार्य कर बैठने की संभावना होती है। भावनाएं तीव्र अवश्य होनी चाहिये, परंतु उनपर विवेक का अंकुश रहना चाहिये। उसपर ध्येय निष्ठा का प्रभाव रहना चाहिये। उसके द्वारा योग्य मार्ग पर हमारी प्रगति होनी चाहिये। हमें उन्मार्गगामी बनानेवाली भावना किस काम की ?
- कभी कभी अपने को अनजाने में कार्य के लिये अत्यंत घातक ऐसा वैयक्तिक अहंकार मन में प्रवेश कर जाता है। अहंकार बहुत ही दुष्ट वृत्ति है। अपने को अहंकार आया कि सब दुर्गुणों की सेना उसके साथ घुस जाती है। वह कब आ बैठेगा, कह नहीं सकते। इस सम्बन्ध में कृतकृत्यता या खोटा आत्मविश्वास लेकर चलना अपनी आत्मवंचना करना है। अतएव इन सब विकारों से मुक्त होने व रहने के लिये हम सबको इस वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्रोपासना के रुप में चलनेवाली शाखा को एकाग्र चित्त से चलाने की आवश्यकता है - दिन प्रतिदिन का आग्रह हम लोग इसी दृष्टि से करते हैं।
- हम सब को अपना स्वयं का चरित्र कैसा है, यह विचारना चाहिए। हमारे चरित्र में किसी भी प्रकार का दोष न आजाये

यह ध्यान रखना चाहिए। किसी भी आंदोलन में सामान्य जनता कार्यकर्ता के कार्य से ज्यादा कार्यकर्ता के व्यक्तिगत चरित्र को बहुत बारीकी से देखती है, इसलिए हमारा जीवन रुपी वस्त्र इतना पवित्र होना चाहिये कि उसमें खोजने पर एक भी दाग न मिले। लोगों को यह विश्वास हो जाना चाहिये कि हम प्रत्येक कार्य को स्वार्थरहित बुद्धि की प्रेरणा से ही करते हैं।

- हमारा चरित्र इतना उज्जवल होना चाहिये कि उसको देखते ही अन्य लोग मुग्ध हो जाये। हमारे साथ मित्रता बढाने की और सब प्रकार से हमारे हितो की रक्षा करने की उनकी इच्छा उत्तरोत्तर बढती जाये, बलवत्तर ही होती जाये।
- हमारा विरोध करने वाले भी हमारे शुद्धचरित्र को देखकर हम से प्रेम करेंगे, किन्तु किसी कारणवश उनको यह ज्ञात होगा कि हमारा चरित्र शुद्ध नही है तो संघ के प्रति उनका प्रेम तथा हमारे प्रति उनका जो आदर है वह क्षण-भर में ही नष्ट हो जायेगा। लोग हमे देखते नही है ऐसे भ्रम में नही रहना चाहिये। लोग हमारे चरित्र एवं कार्य को बारीकी से देखते रहते हैं। अतः केवल व्यक्तिगत आचरण के प्रति सजग रहने से कार्य नही चलेगा। सार्वजनिक एवं सामूहिक जीवन में भी हमारे चरित्र को उदात्त बनाना होगा, उसके साथ ही हमारे चरित्र की निष्कलंकता के कारण अज्ञानवश हम अन्य लोगो से श्रेष्ठ हैं ऐसी दुर्भावना एवं अहंकार भी हमारे मन में कभी भी उत्पन्न नही होना चाहिये।

卐 इति ओ३म् 卐

ईश्वर एक नाम अनेक

कुछ नाम कर्मों के कारण प्रसिद्ध हुए हैं ।

विश्व को बनाता है इसलिए "**विश्वकर्मा**", सभी का कल्याण करता है इसलिए "**शिव**", दुष्टों को दंड देने वाला है इसलिए "**रुद्र**" इत्यादि ।

कुछ नाम गुणों के कारण प्रसिद्ध हुए हैं ।

सृष्टि रचयिता है इसलिए "**ब्रह्मा**", कण-कण में व्यापक है इसलिए "**विष्णु**", सबसे बड़ा है इसलिए "**महेश**", सब कालों से परे है इसलिए "**अकाल**" इत्यादि ।

कुछ नाम सम्बन्ध के कारण प्रसिद्ध हुए हैं ।

सबका अंतर्यामी है इसलिए "**परमात्मा**", जन्म देने वाली माता के समान है इसलिए "**माता**" या "**अम्बा**", पालन करने वाले पिता के समान है इसलिए "**परमपिता**" इत्यादि ।

परंतु ईश्वर का अपना निज नाम एक मात्र "ओ३म्" है ।

(वेद - दर्शन - उपनिषद)

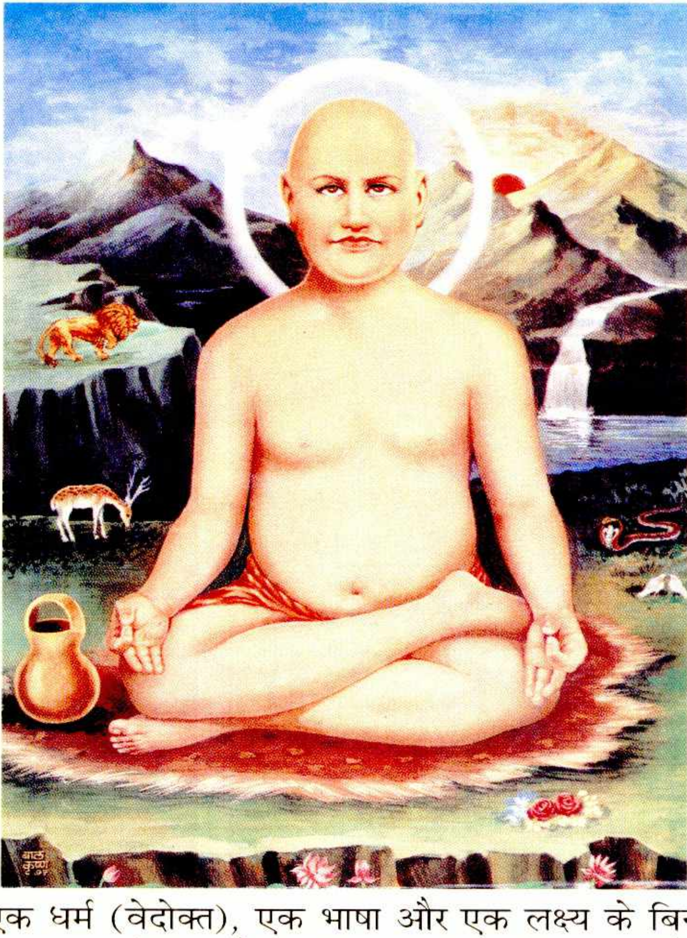

एक धर्म (वेदोक्त), एक भाषा और एक लक्ष्य के बिना राष्ट्र का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर हैं। सब उन्नतिओं का केन्द्र स्थान एक्य हैं। जहाँ भाषा भाव और भावना में एकता आ जाए वहाँ सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं।

- महर्षि दयानन्द